S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER
A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue I, June 2018, pp. 107-111
www.srsshodhsansthan.org

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन

डॉ.निशा श्रीवास्तव
रीडर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग, छ.ग.

सारांश – *प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर नेतृत्व क्षमता सामाजिक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन करना है। राष्ट्रीय एकता मापने के लिए डॉ. एस. सी. गाखर एवं डॉ. मंजूला नरोला द्वारा निर्मित उपकरण तथा सामाजिक मूल्य के अध्ययन के लिए डॉ. आर. के. ओझा एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन हेतु महाविद्यालय में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कुल 400 विद्यार्थियों (200 कला संकाय के विद्यार्थियों के तथा 200 विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर राष्ट्रीय एकता व्यवहार एवं सामाजिक मूल्य व्यवहार के परीक्षण का प्रशासन करके उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये। इसके आधार पर प्रसरण विश्लेषण (एनोवा) से एफ–रेशियों प्राप्त किया गया। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते है कि महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य एवं क्षेत्र का प्रभाव सार्थक पाया गया। संकाय का प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।*

प्रस्तावना– राष्ट्रीय एकता सम्मेलन (1961) के अनुसार राष्ट्रीय एकता एक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा लोगों के दिलों में एकता, संगठन एवं सन्निकटता की भावना, सामान्य नागरिकता की भावना, देश के प्रति भक्ति की भावना का विकास किया जाता है। मूल्य व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है और इस दृष्टि से मूल्य वह वस्तु, परिस्थिति व क्रिया है जिसमें व्यक्ति संतुष्टि का अनुभव करता है। सामाजिक मूल्य का संबंध सामाजिक कल्याण से होता है। इसके अतर्गत आदर्श मानवता, दायित्व, सद्भाव आदि समाहित होते है। सामाजिक मूल्य वाले व्यक्तियों का उच्चतम मूल्य लोगों के लिए प्यार व अपनेपन की भावना के लिए है। इनके द्वारा समाज को उच्च व महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। 'सामाजिक मूल्य' शब्द उन नियमों को परिभाषित करता है, जिन्हें मनुष्य जीवन के हित में रखा जाता है। समाज ने जो नियम बनाए हैं, वे सभी ऐसे व्यवहारगत हैं, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए सुखदायी या कल्याणकारी हों।

सामाजिक मूल्य, समाज के सदस्यों के लिए सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करते है जो जीवन–दर्शन से संबंधित होते है। सामाजिक मूल्य वह है जिसमें व्यक्ति समाज को महत्वपूर्ण स्थान देता है। इसके द्वारा व्यक्ति समाज के कल्याण की कल्पना करता है। सर्वत्र जातीयता, क्षेत्रवादिता, साम्प्रदायिकता तथा भ्रष्टाचार आदि सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याएँ राष्ट्र के सामने चुनौती बनकर खड़ी हुई है। जिसका मुख्य कारण सैद्धांतिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास है। जिसके फलस्वरूप समाजोत्थान का मार्ग अवरूद्ध हो गया है **मेकाइवर के अनुसार – "राष्ट्र का गुण उसकी सामाजिक इकाइयों का गुण है, अर्थात् सामाजिक इकाईयों का सामूहिक जीवन ही राष्ट्रीय जीवन है यदि सामाजिक इकाईयॉ निर्बल है तो राष्ट्र कैसे दैदीप्यमान हो सकता है?** अतः आज की विसंगतियों में समाज तथा उसके प्रत्येक सदस्य का यह दायित्व हो जाता है कि वह मूल्यों के विकास पर बल दे क्योंकि मूल्यविहीन समाज विनाश की ओर जायेगा न कि विकास की ओर। अतः ये मूल्य है जो मानव को उत्कर्ष की ओर ले चलते है। वे हमारे जीवन में श्रद्धा, विश्वास, प्रेरणा, प्रतिबद्धता इत्यादि भावों का संचरण करते हैं। पुरांग एवं शर्मा (2000) के शोध निष्कर्ष के अनुसार सामाजिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ता है। अग्रवाल, व्ही. एवं सोनेजी, भावना (2006) ने अध्ययन में प्राप्त किया कि प्रत्येक छात्राओं के जीवन मूल्यों में अंतर होता है। यदि छात्राओं के जीवन मूल्यों को पहचान लिया जाए तो वे एक नवीन सृजन की ओर उन्मुख हो सकेंगे। जिन छात्रों के जीवन मूल्यों में सैद्धांतिक, धार्मिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों की प्रधानता होती है, उनमें सृजन शक्ति अधिक होती है। शिक्षा का कार्य केवल सूचना या ज्ञान प्रदान करना ना होकर बालक का निर्माण करना है, अतएव मूल्य का संप्रत्यय समझकर समसामयिक तथा शाश्वत मूल्य तथा राष्ट्रीय एकता का प्रत्यारोपण करना वर्तमान समय की प्रथम आवश्यकता है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई तथा सिक्ख आदि विभिन्न सामाजिक वर्ग पाये जाते हैं। इन सभी सामाजिक वर्गों में आपसी घृणा तथा विरोध की भावना पाई जाती है। प्रत्येक जाति अथवा धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म अथवा जाति के व्यक्ति से अपने आप को ऊँचा समझता है। इससे प्रत्येक व्यक्ति में एक दूसरे के प्रति पृथकता की भावना उग्र रूप

धारण कर चुकी है इस संकुचित भावना को त्याग कर वह राष्ट्रीय हित के व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। चौधरी,नागेश.(2012). ने भारत में सामाजिक मूल्यों के विकास तथा ज्ञान का राष्ट्रीय एकता में भूमिका पर अध्ययन किया। इन्होंने नागपुर में 200 व्यक्तियों पर परीक्षण किया, जिनकी उम्र 40–60 वर्ष की थी, और निष्कर्ष निकाला कि भारत की एकता को खंडित करने का भारत पाक का युद्ध सबसे बड़ा कारण है। सभी धर्म अपने पंरपरा के अनुसार अपने समाज का निर्माण करते है। मुस्लिम संघ के अपने अलग सामाजिक नियम होते है। भारत में सबसे बड़ी जनसंख्या हिन्दुओं की है जो अपने में दूसरे धर्म को समाहित नहीं होने देते। सभी देशवासी अपने–अपने त्यौहारों को अधिक मान्यता देने पर तुले हुए है। हजोलिफर, जॉनसन. (2001) ने थायलैण्ड में राष्ट्रीय एकता तथा अल्पसंख्यकों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि अल्पसंख्यकों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का उनकी राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य, क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) एवं संकाय (कला एवं विज्ञान) के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रतिदर्श – दुर्ग जिले महाविद्यालय का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। 26 महाविद्यालयों में से 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। स्नातक स्तर (प्रथम वर्ष) के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों पर प्रतिदर्श का चयन किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों से 200 तथा शहरी क्षेत्रों के महाविद्यालयों से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। 400 विद्यार्थियों में से 200 विद्यार्थी कला संकाय के एवं 200 विद्यार्थी विज्ञान संकाय के चयन किये गये है।

उपकरण–राष्ट्रीय एकता मापने के लिए डॉ. एस. सी. गाखर एवं डॉ. मंजूला नरोला द्वारा निर्मित उपकरण, सामाजिक मूल्य के अध्ययन के लिए डॉ. आर. के. ओझा एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

संख्यिकीय विश्लेषण–परिकल्पना विश्लेषण हेतु प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण 2×2×2 (सामाजिक मूल्य × क्षेत्र × संकाय) कारक अभिकल्प का प्रयोग कर प्रसरण विश्लेषण (एनोवा) से एफ–रेशियों प्राप्त किया गया।

परिकल्पना, परिणाम एवं विवेचना

एच$_{01}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य (उच्च एवं निम्न), महाविद्यालयीन क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) एवं महाविद्यालयीन संकाय (कला एवं विज्ञान) का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक (1) –एनोवा सारांश (2×2×2)

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिकमूल्य (A),
महाविद्यालयीन क्षेत्र (B) **(शहरी एवं ग्रामीण), तथा संकाय (कला एवं विज्ञान)** (C)**का प्रभाव**

Source	df	Sum of Square	Mean Square	F
A	1	2.487	2.487	0.05••
B	1	958.531	958.531	19.11**
C	1	135.158	135.158	2.69••
AxB	1	14.453	14.453	0.28••
AxC	1	60.228	60.228	1.20••
BxC	1	30.309	30.309	0.60••
AxBxC	1	132.438	132.438	2.64••
Error	255	12785.681	50.140	
Total	263	688105.000		
Corrected Total	262	14001.483		

****0.01 स्तर पर सार्थकता, *0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant**

एच$_{01-1.1}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य (उच्च एवं निम्न) का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।

सामाजिक मूल्य, (उच्च एवं निम्न) के लिए F=0.05, (df =1/262),P>.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के **राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।** अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.1}$ स्वीकृत** होती है।

एच$_{01-1.2}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर महाविद्यालयीन क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक (2)

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर मुख्य प्रभाव

क्षेत्र ↓	राष्ट्रीय एकता	
	Mean	Std. Error
शहरी क्षेत्र (b_1)	52.72	0.63
ग्रामीण क्षेत्र (b_2)	48.81	0.63

राष्ट्रीय एकता पर क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का प्रभाव F=19.11,(df =1/262),P<.01 स्तर पर सार्थक है। क्षेत्र के माध्यों का अवलोकन (तालिका क्रमांक 2) करने से ज्ञात होता है कि **शहरी क्षेत्र का माध्य(M)= 52.72** ग्रामीण क्षेत्र के माध्य **(M)= 48.81** की अपेक्षा **अधिक है।** अर्थात् **राष्ट्रीय एकता पर शहरी में स्थित महाविद्यालय का सार्थक प्रभाव पड़ता है।** अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.2}$ अस्वीकृत** होती है।

एच$_{01-1.3}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर संकाय (कला एवं विज्ञान) का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा।
तालिका (1) के अनुसार **संकाय (कला एवं विज्ञान) के लिए F = 2.69, (df = 1/262), P>.05** स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के **राष्ट्रीय एकता पर संकाय का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।** अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.3}$ स्वीकृत** होती है।
एच$_{01-1.4}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर **सामाजिक मूल्य** एवं **क्षेत्र** (ग्रामीण एवं शहरी) **के अंतःक्रिया** का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका (1) के अनुसार **समाजिक मूल्य, एवं क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव F=0.28, (df =1/262),P>.05** स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् राष्ट्रीय एकता पर **सामाजिक मूल्य** एवं महाविद्यालयीन **क्षेत्र** (ग्रामीण एवं शहरी) **के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं** पड़ता है। अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.4}$ स्वीकृत** होती है।

एच$_{01-1.5}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर **सामाजिक मूल्य** एवं महाविद्यालयीन **संकाय** (कला एवं विज्ञान) **के अंतःक्रिया** का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
तालिका (1) के अनुसार **सामाजिक मूल्य एवं महाविद्यालयीन संकाय (कला एवं विज्ञान) के मध्य अंतःक्रिया F=1.20,(df =1/262),P>.05** स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात् महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर **सामाजिक मूल्य** एवं महाविद्यालयीन **संकाय** (कला एवं विज्ञान) **के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता** है। अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.5}$ स्वीकृत** होती है।

एच$_{01-1.6}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर महाविद्यालयीन **क्षेत्र (**ग्रामीण एवं शहरी)एवं महाविद्यालयीन **संकाय** (कला एवं विज्ञान) **के अंतःक्रिया** का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका (1) के अनुसार **क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी)एवं संकाय (कला एवं विज्ञान) के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव F=0.60,(df =1/262),P>.05** स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् राष्ट्रीय एकता पर महाविद्यालयीन **क्षेत्र** (ग्रामीण एवं शहरी), **संकाय** (कला एवं विज्ञान)**के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं** पड़ता है। अतः परिकल्पना **एच$_{01-1.6}$ स्वीकृत** होती है।

एच$_{01-1.7}$ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य (उच्च एवं निम्न), महाविद्यालयीन क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) एवं महाविद्यालयीन संकाय (कला एवं विज्ञान) के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका (1) के अनुसार **सामाजिक मूल्य(उच्च एवं निम्न), क्षेत्र एवं संकाय के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव F=2.64,(df =1/262),P>.05** स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् राष्ट्रीय एकता पर **सामाजिक मूल्य** (उच्च एवं निम्न),महाविद्यालयीन **क्षेत्र** (ग्रामीण एवं शहरी), **संकाय** (कला एवं विज्ञान) **के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।** अत परिकल्पना **एच$_{01-1.7}$ स्वीकृत** होती है।

विवेचना – महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एकता पर सामाजिक मूल्य के शहरी क्षेत्र का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। उच्च सामाजिक मूल्य वाले शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता अधिक पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है कि उच्च सामाजिक मूल्य से युक्त विद्यार्थी समाज के सदस्यों के लिए सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करते है। ये सामाजिक आदर्श उनके उच्च विचार होते है इसीलिए इनमें एकता की भावना अधिक पायी जाती है। एन.सी.ई.आर.टी.(1969–70) राष्ट्रीय एकता के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि क्षेत्रीय असंतुलन भी राष्ट्रीय एकता के अभाव का कारण है। शहरी क्षेत्र का पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण विद्यार्थियों को अपने क्षेत्र के साथ अनुक्रिया करने का अवसर प्रदान करता है। शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक रहते है, नये शिक्षण विधियों का प्रयोग तथा कक्षा का प्रजातांत्रिक वातावरण, विद्यार्थियों की क्रियाओं एवं आत्म–अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता की भावना को संबल प्रदान करता है।

सुझाव– वर्तमान समय में मूल्यों का अभाव के कारण चारित्रिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ब्रहम (1982) ने मूल्य केन्द्रित शिक्षा पर अध्ययन किया और पाया कि शिक्षा वर्तमान मूल्यों के अनुसार दी जानी चाहिए, ताकि वे उन मूल्यों को आत्म केन्द्रित कर जीवन संघर्षो का सामना कर सकें। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को ऐसे अवसर प्रदान किए जाए कि वे विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं, साहित्यों तथा सांस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकें। छात्रों में व्यापक दृष्टिकोण, रूचियों, संवेगों के विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षा–संस्थानों की सभी शैक्षिक क्रियाओं में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना प्रस्फुटित हो। इसके लिए पाठ्यक्रम का पुनर्गठन करके उनमें ऐसी पाठ्यवस्तु सम्मिलित करनी होगी जो राष्ट्रीय एकता पर बल देती हो।

समाज के सदस्यों के मध्य पाये जाने वाले संबंध का प्रभाव मानव मूल्यों पर पड़ता है। मूल्यों के विकास में समाज का योगदान को नजर अंदाज नहीं कर सकते क्योंकि समाज ही विभिन्न क्रियाकलापों (सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्रियाओं) का आयोजन करके मूल्य के विकास में सहायक होता है। समाज में फैलती उपभोक्तावादी प्रवृत्तियॉ युवाओं को रोजगारोंमुखी शिक्षा में उलझा कर रख देती है उन्हें इस बात का इल्म नही होता कि राष्ट्रीय क्या है। समाज में बालकों को मूल्योंन्मुख जीवन व्यतीत करने के लिये मानसिक रूप से तैयार करना चाहिये। चेन्नई हाल के सांप्रदायिक दंगे तथा महिलाओं एवं बच्चों के खिलाफ अपराध पर चिंता प्रकट करते हुए राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने सिनेमा उद्योग से सामाजिक बदलाव लाने में योगदान करने वाली और सकारात्मक मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली फिल्में बनाने का आह्वान किया। उन्होंने यहां भारतीय सिनेमा के सौ साल पर एक कार्यक्रम में कहा कि संचार के लोकप्रिय और सशक्त माध्यम सिनेमा को मनोरंजन और सामाजिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाना चाहिए। सिनेमा उद्योग से जुड़े हर शख्स की यह जिम्मेदारी है कि वह इस सशक्त माध्यम का इस्तेमाल कर सहिष्णु एवं सद्भावपूर्ण भारत के निर्माण के लिए सकारात्मक सामाजिक मूल्यों को प्रदर्शित करे।

संदर्भित ग्रन्थ सूची

- भटनागर,मीनाक्षी.,एवं भटनागर,आर.पी. (2007).शिक्षा अनुसंधान.(द्वितीय संस्करण पेज नं. 256). मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस.
- गुप्ता,एस.पी.(2004).भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ.(पेज नं.495 से 497)इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता,एम. एल., एवं डी. डी. शर्मा.(1984).सामाजिक समस्याएँ .(द्वितीय संस्करण पेज नं. 312 से 327.) आगराः साहित्य भवन पब्लिकेशन्स.
- कपिल, एच.के. (2010).सांख्यिकी के मूल तत्व.(पेज 604 से 645.) आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
- कपिल,एच.के.(1984).अनुसंधान विधियॉ.(पेज नं. 46,93,107,143).आगराः भार्गव पुस्तक प्रकाशन.
- लाल,विश्वनाथ बिहारी.,एवं त्रिपाठी,नरेशचन्द्र.शिक्षा के नूतन आयाम.(पेज नं.154 से 164)आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.
- राय, पारसनाथ (2007). अनुसंधान परिचय. (पेज 285 से 299.)आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
- वर्मा,प्रीति,एवं डी.एन.श्रीवास्तव.(2001).मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी.(पेजनं. 330 से 349.) आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.
- पाण्डेय,गणेश.(2004).सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी .(प्रथम संस्करण पेज 217). राधा पब्लिकेशन्स.
- पाण्डे,रामशकल.(2005).शिक्षा के मूल सिद्वांत. (चतुर्थ संस्करण).आगरा 2ः विनोद पुस्तक मंदिर.
- पाण्डेय,रामशकल.(2009).शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि.(पेज 381से 386).आगरा :अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- मंगल,अंशु एवं ए. बरौलिया.शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँः समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी .(नवीनतम संस्करण पेज 309 से 327.) आगराः राधा प्रकाशन मंदिर.
- मिश्रा,करूणाशंकर, एवं पाण्डेय,रामशकल. (1991). मूल्य शिक्षण (पेज नं.1–17) आगरा 2:विनोद पुस्तक मंदिर.
- मिश्रा,करूणाशंकर,एवं पाण्डेय,रामशकल. (2009).मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण.(तृतीय संस्करण).आगरा 2ः विनोद पुस्तक मंदिर.

- मित्तल,एम.एल.(2005).उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. (पेज 380 से 387).मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग.
- त्यागी,गुरुसरणदास,रावल मृदुला.लाल आर.बी.,सक्सेना ,स्वाति. शिक्षा के सिद्वांत. (पेज नं. 241 से 253). आगरा 2: विनोद पुस्तक मंदिर.
- सरीन, शशिकला. एवं अंजनी, सरीन. (2009). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ. (पेज 118 से 141) आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
- सक्सेना एन. आर. स्वरूप (2010). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत (प्रथम संस्करण) मेंरठः, आर. लाल बुक डिपो,पेज नं. : 925–934
- सिंह ,रामपाल एवं शर्मा, ओ.पी.(2008). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. (पेज 128 से 145.) आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- सिंह,लाजवन्त(2013).सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी विधियाँ. (प्रथम संस्करण,पेज132.).आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- शर्मा,प्रभुदत्त. लोक प्रशासन सिद्वांत एवं व्यवहार(पेज नं. 363 से 387).जयपुर–2:रतन प्रकाशन मंदिर.
- सिंह,आर.एल.(1984).लोक प्रशासनःसिद्वांत एवं व्यवहार.(पंचम् संस्करण पेज नं. 241 से 252). दिल्ली–2:रतन प्रकाशन मंदिर.
- शर्मा, आर.ए. (2009). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया .(पेज194 से215.) मेंरठ : आर. लाल बुक डिपो.
- शर्मा, आर. ए.,एवं शर्मा, एच. एस.शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार.(अष्टम् संस्करण पेज 283से 320). आगरा2: राधा प्रकाशन मंदिर.
- शर्मा,आर.के.,एवं पुरोहित, जेड. एन.(2006).उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक. (पंचम संस्करण पेज 163से 169). आगराःराधा प्रकाशन मंदिर.
- यादव,सुकेश.,एवं सक्सेना,सविता.(2007).शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ एवं सांख्यिकी.(प्रथम संस्करण पेज 133). आगराः साहित्य प्रकाशन.